चीन का दौरा काफी सफल रहा: विदेश मंत्री

प्रधानमंत्री ली के साथ मुलाकात काफी मैत्रीपूर्ण और अच्छी रही।..... सैद्धांतिक रूप से हम इस बात पर सहमत हुए कि आपस में साथ जुड़े शहरों और प्रातों के संबंध में दोनों देशों के विदेश मंत्रालय सहमति ज्ञापन आदान-प्रदान करेंगे। इसे चीनी निवेश के साथ जोड़े जाने पर सहमति हुई। भारत में चीनी औद्योगिक पार्क का हमने वादा किया है और इसके लिए चीन के वाणिज्य मंत्रालय के प्रतिनिधि जल्द ही भारत का दौरा कर सकते हैं और इसके लिए वे पूर्व में चयनित जगहों के अतिरिक्त अन्य जगहों का भी निरीक्षण कर सकते हैं जो चीनी औद्योगिक पार्क के लिए उपयुक्त होगा।

किंतु यह हमारी मौजूदा व्यापार नीति के संतुलन के हमारे प्रयासों के अनुरूप होना चाहिए, जो तेजी से बढ़ रही है लेकिन इसके संतुलन के संबंध में हमारी चिंताएं बनी हुई हैं और चीनी इस बात से सहमत थे कि हमें विशिष्ट तौर पर हमारे व्यापार संतुलन के मुद्दे को संबोधित करना होगा और इसे टिकाऊ बनाना होगा।

2. दो महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जिसपर और अधिक काम करने पर हम सहमत हुए हैं, ये ऐसे मुद्दे जिसपर हमें और अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है। पहला बांग्लादेश-चीन-भारत-म्यामां आर्थिक गलियारा, जो हमारी पूर्वोन्मुख नीति और आसियान से साथ जुड़ाव से संबंधित है।

अन्य मुद्दा है क्षेत्रीय व्यापार समझौता जिसका सुझाव उन्होंने दिया है। यह भी हमारे व्यापार असंतुलन से जुड़ा है। हमने कहा कि व्यापार असंतुलन को संबोधित करने को वरीयता दी जानी चाहिए इसके बाद हम क्षेत्रीय व्यापार समझौते की ओर आगे बढ़ सकते हैं।

3. चीनी पक्ष ने कुछ सप्ताह पहले सीमा रक्षा सहयोग समझौते को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया था जिसमें कई महत्वपूर्ण समझौतों और प्रोटोकॉल तथा प्रणालियों का समेकन है जिसे एक साथ संकलित किया गया है।..... एक महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय कदम सीमा पार बहने वाली नदियों से संबंधित था। चीनी पक्ष ने उच्चतम स्तर पर यह पुष्टि की कि नदियों के जल के संबंध में जलप्रवाह का कोई भी प्रतिकूल असर भारत पर नहीं होगा।

4. चर्चा का सबसे अहम और महत्वपूर्ण पक्ष नियंत्रण रेखा की हालिया समस्या पर बातचीत थी। इस बारे में हमारा मत एक जैसा था। चीन और भारत का मानना है कि इस प्रकार के मुद्दों और इस प्रकार की घटनाओं से निपटने की प्रणाली काफी दुरुस्त है । ये आगे भी काम करती रहेगी और यह संतोषप्रद रहा कि इस प्रणाली ने कारगर रूप से काम किया।

यह भी स्पष्ट था कि हम दोनों इस बात में विश्वास करते हैं कि चीन और हमारे बीच इस तरह की घटनाएं हमारे रिश्तों के आडे नहीं आनी चाहिए। पिछले दस वर्षों में हमारे निवेश, व्यापार और लोगों के बीच संपर्क में वृद्धि के रूप में इन रिश्तों के संकेत को महसूस किया जा सकता है।

5..... हमें महसूस हुआ कि हमें अपने तंत्र का विश्लेषण करना होगा कि आखिर इस प्रकार की चीजें क्यों हुई या फिर हालिया घटना क्यों घटी। जिस प्रकार संतोषजनक रूप से इसका हल निकला उससे हम सीख ले सकते हैं। हमें इससे भी सबक लेना चाहे कि यह क्यों हुआ, किस तरह यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि ऐसा न हो। और यदि हमारे बेहतरीन प्रयत्नों के बावजूद इस प्रकार की कोई घटना हो तो उसे जल्द से जल्द निपटाया जा सके। इस बार इसे सुलझाने में तीन सप्ताह का वक्त लगा इससे कम समय में हमें इसे सुलझाने में सक्षम होना चाहिए।

6. हमारा उद्देश्य अपने चीनी दोस्तों को यह स्पष्ट करना था कि यह कोई स्थिर रहने वाली चीज नहीं है बल्कि यह हमारे लोगों, और मैं समझता हूं कि, उनके लोगों दोनों के एक- दूसरे के प्रति सोच का हिस्सा बन जाती है। हम इस घटनाक्रम के गड़े-मुर्दे नहीं उखाड़ रहे थे और न ही दोष दे रहे थे। लेकिन हम यह जरूर मानते हैं कि दोनों देशों के हित के लिए यह महत्वपूर्ण है कि इस प्रकार की घटनाओं को सही तरह से संबोधित किया जाना चाहिए।

(स्रोत : विदेश मंत्री की हालिया चीन यात्रा के उपरांत नई दिल्ली वापस लौटने पर उनके वक्तव्य का हिस्सा)